

’96 深圳文艺丛书

菁园诗粹

吴邦展 著



海·天·出·版·社

抚摸诗歌

——序《菁园诗粹》

因为一位我没有见过的朋友，我又认识了一位诗歌的虔诚爱好者。在潮汕平原，在飘过一阵又一阵的功夫茶香和潮州柑的芬香之后，一位叫吴邦展的乡村诗人正枕着诗歌，走进他朴实和坚强的诗中。

至今，我没有去过潮汕。但我领略过潮州菜，也领教过潮州人在生意场上的精明。干爽、义气、团结的潮州人以及他们衍生出来的赚钱的文化，吃的文化，使人想起了他们身上种种谜一样的东西。

不管怎么样，被潮汕文化濡染出来的潮汕人中，肯定有着他们某些独特的精神；但是把诗歌作为精神生活的大部分乃至全部，即使是在那块有“海滨邹鲁”之称的潮汕平原，我仍有些惊讶。

吴邦展自幼熟读唐诗宋词，对中国传统文化有着至深的热爱；同时，他又十分刻苦、灵慧。听说他没有上过正规医校，靠着十几个春秋的苦读，啃完中国《本草纲目》、《黄帝内经》、《伤寒杂病论》等古今著名药医药典，终于脱颖而出，成为远近闻名的悬壶好手，为乡人排忧解难，博得人们的好评。

而他对于诗歌，则完全是内心之感情使他倾注了炽热的创作热情。厚厚的一本诗集，写了数年，呕心沥血，他不是为了发表，而是为了内心感情的一种宣泄。这样的诗歌，是注定会为读者认同和富有感情色彩的。

自古诗言志，至今皆然。只有摒弃了功利，诗才会变得真实和纯粹。收在《菁园诗粹》的诗篇，富有感情张力，作者受古典文学的影响也颇深。但诗人又好象不拘泥于形式，对他的这种探索，我认为是有益和值得勉励的。文无定法，诗歌亦然。重要的不是钻进象牙塔搞那些包括自己在内谁也不懂的所谓“现代诗”，而是发于生活、发于内心，进行一种健康、美丽的诗的形式和精神的改造和建设。

诗的品质的高低，自然是见仁见智，并且也留让时间去评判，但我为潮汕乡村诗人吴邦展喝采，为他的诗喝采。他的写诗，让我们看到一种闪光的东西在向我们走来。

大风

1996年于北京

目 录

| | |
|----------|----|
| 石崇 | 1 |
| 问君 | 1 |
| 诗山医海 | 2 |
| 惊航 | 2 |
| 优恋 | 3 |
| 香山红叶 | 3 |
| 君心 | 4 |
| 君有诗情 | 4 |
| 莲荷 | 5 |
| 有感 | 5 |
| 登高观鸥 | 6 |
| 无题 | 6 |
| 思君 | 7 |
| 观“松鹤图”致友 | 7 |
| 试题荷花 | 8 |
| 昨夜莲荷 | 8 |
| 掣剑(二首) | 9 |
| 深情 | 10 |
| 愁云 | 10 |
| 楼外 | 11 |
| 海潮 | 11 |
| 触景 | 12 |

| | |
|--------------------|----|
| 梦游山海歌(二首) | 12 |
| 识君 | 13 |
| 耳畔声琅 | 14 |
| 君情磊落 | 14 |
| 田野蛙声 | 15 |
| 愁肠欲断 | 15 |
| 题“春到漓江图” | 16 |
| 闻友购书 | 16 |
| 晨雾 | 17 |
| 感受音乐 | 17 |
| 馥郁香风 | 18 |
| 衷歌劝友 | 18 |
| 述志 | 19 |
| 一腔热火 | 19 |
| 即景驰思 | 20 |
| 梦临江海, 驰思述怀致友 | 20 |
| 闻友患疾 | 21 |
| 登文光塔 | 21 |
| 千思恍然 | 22 |
| 遣悲怀 | 22 |
| 遐思 | 23 |
| 登莲花峰 | 23 |
| 书怀 | 24 |
| 鬓染秋霜 | 24 |

| | |
|----------|----|
| 才踏江橋 | 25 |
| 秋風帶雨 | 25 |
| 游園觀感 | 26 |
| 莫嘆愁緒 | 26 |
| 感慨 | 27 |
| 秋夜 | 27 |
| 夢回 | 28 |
| 記夢 | 28 |
| 海濱邂逅 | 29 |
| 寒夜風咽 | 29 |
| 心跳手抖 | 30 |
| 忍淚千歌 | 30 |
| 自勉策友 | 31 |
| 馳思 | 31 |
| 一腔激情 | 32 |
| 戲言練筆 | 32 |
| 評“陸步青” | 33 |
| 致友抒懷(三首) | 33 |
| 野渡幽思 | 34 |
| 漫筆 | 35 |
| 野外漫思 | 35 |
| 獨游有感 | 36 |
| 無題 | 36 |
| 獨坐 | 37 |

| | |
|----------|----|
| 畏逢 | 37 |
| 梦晤 | 38 |
| 感君思已 | 38 |
| 昔岁豪情 | 39 |
| 残阳西沉 | 39 |
| 夜起赏月 | 39 |
| 梦回偶书(二首) | 40 |
| 诗余偶感 | 40 |
| 游园(四首) | 41 |
| 我心何寄(二首) | 42 |
| 即景 | 43 |
| 勉友深造 | 43 |
| 送别 | 44 |
| 回首 | 44 |
| 中秋遥想 | 45 |
| 梦回杂咏(七首) | 45 |
| 请君休谴 | 48 |
| 挥鞭 | 48 |
| 秋枫红染 | 49 |
| 耳畔君言 | 49 |
| 偶忆(四首) | 50 |
| 三秋 | 52 |
| 年华空磨 | 52 |
| 百度梦回 | 53 |

| | |
|----------|----|
| 心海愁涛 | 53 |
| 沧海寻珠 | 54 |
| 无题 | 54 |
| 天涯万里 | 55 |
| 再咏荷花 | 55 |
| 青山长留 | 56 |
| 奋登医峰 | 56 |
| 梦回杂咏(八首) | 57 |
| 述怀 | 60 |
| 思别 | 60 |
| 寒辉溶溶 | 61 |
| 评语复友 | 61 |
| 梦回杂咏 | 62 |
| 致失恋者 | 62 |
| 受图谢友 | 62 |
| 心似巫山 | 63 |
| 恨我痴情 | 63 |
| 暗夜长跑 | 64 |
| 评普希金 | 64 |
| 自画像致挚友 | 65 |
| 岁月如波 | 65 |
| 感谢生活 | 66 |
| 致心灵上的密友 | 66 |
| 理想之歌 | 67 |

| | |
|-------------|----|
| 朝云暮霭 | 67 |
| 霜月悲凄 | 68 |
| 评戏 | 68 |
| 告别 | 69 |
| 观像有感 | 69 |
| 万箭穿心 | 70 |
| 写给友人(十首) | 70 |
| 为一个人而作(十三首) | 73 |
| 更残霜月 | 77 |
| 楼外遥忆(三首) | 78 |
| 愁潮暗翻 | 79 |
| 临别赠友 | 79 |
| 劝君 | 79 |
| 将别 | 80 |
| 进校偶感 | 80 |
| 惊涛滚滚 | 80 |
| 独立暮岸 | 81 |
| 华容易逝 | 81 |
| 解谜(二首) | 82 |
| 叹人生 | 82 |
| 临别赠友(三首) | 83 |
| 前途 | 84 |
| 我之幸福观 | 84 |
| 梦回杂咏(三首) | 85 |

| | |
|----------|-----|
| 独特的哀思 | 86 |
| 夜游 | 86 |
| 感悟 | 87 |
| 怀友 | 87 |
| 慰君 | 87 |
| 逗留书店偶感 | 88 |
| 志士洒泪 | 88 |
| 嘱友十歌 | 89 |
| 十恨歌 | 90 |
| 十哀歌 | 91 |
| 十嘲歌 | 92 |
| 歌成有感 | 93 |
| 送友赴考 | 93 |
| 偶忆早秋 | 94 |
| 迎友人考试归来 | 94 |
| 杂咏(四首) | 95 |
| 似水流年 | 96 |
| 偶感 | 97 |
| 如今 | 97 |
| 自咏二首(二首) | 98 |
| 衷情何诉 | 99 |
| 浇花 | 99 |
| 夏日偶得(四首) | 100 |
| 夏吟(九首) | 102 |

| | |
|----------|-----|
| 钟情如海 | 105 |
| 梦回推窗望月 | 105 |
| 小聚 | 106 |
| 豪情 | 106 |
| 徜徉岔道 | 107 |
| 归校 | 107 |
| 读医典 | 108 |
| 一行悲歌 | 108 |
| 感触 | 109 |
| 远别 | 109 |
| 夏咏一得 | 110 |
| 赠笔 | 110 |
| 今日情长 | 111 |
| 审慎劝君 | 111 |
| 别梦微寒 | 112 |
| 代信 | 112 |
| 别后杂感(七首) | 113 |
| 夜(三首) | 115 |
| 怅对苍天 | 117 |
| 人前别泪 | 117 |
| 吾心 | 118 |
| 祝君 | 118 |
| 如梦人生(六首) | 119 |
| 医途 | 121 |

| | |
|----------|-----|
| 赴浩溪访友 | 121 |
| 孤月楼台 | 122 |
| 读信 | 122 |
| 冰宵驰思 | 123 |
| 千刀难断 | 123 |
| 咏志 | 124 |
| 尘世 | 124 |
| 爱情杂吟(五首) | 125 |
| 寄远方(十首) | 126 |
| 再寄远方(七首) | 131 |
| 回首往事 | 133 |
| 沉思 | 134 |
| 强音 | 134 |
| 临江楼上 | 135 |
| 祈愿 | 135 |
| 冷月怀旧 | 136 |
| 蹉跎岁月 | 136 |
| 咏史 | 137 |
| 即景驰思 | 137 |
| 述志 | 138 |
| 嘱远 | 138 |
| 晚阅君函 | 139 |
| 雨夜 | 139 |
| 佳茗 | 140 |

| | |
|-----------------|-----|
| 慰已 | 140 |
| 忆旧 | 141 |
| 偶感示人 | 141 |
| 秋声万里 | 142 |
| 草场独步 | 142 |
| “千症诊治歌”脱稿 | 143 |
| 附录 | 144 |
| 后记 | 146 |

石崇

石崇豪富归荒丘，清照丽词传千秋。
只有壮士建伟业，定无懦夫著神州。
永忆海燕傲风雨，欲嘲企鹅惧浪涛。
君有雄心同驰骋，文库添宝死方休。

1982.12.8

问君

问君前途欲何从？岂容功业类转蓬。
扁鹊英名传千古，李白诗坛建奇功。
青松屹立危崖上，苍鹰遨游霜空中。
雨倾江河浪愈急，霜凋枫山色更红。

1982.12.10

诗山医海

应有理想应追求，莫让华年付水流。
商隐寿终名犹在，仲景书存益五洲。
诗山有路毅为径，医海无涯韧是舟。
不图生前庸人乐，只羡身后英名留。

1982.12.15

惊航

江河航船惊暗流，追求理想忌愁忧。
万里征途骐骥美，千仞高峰苍鹰游。
甫谧积学抱病写，买臣读书背薪求。
若能心雄排万难，自有芳名著神州。

1992.12.18

优恋

君行诚挚感余深，倘能绘画定摹临。
诲徒见脏令洗净，知我缺钱代借金。
夜深伏案犹批卷，厌餐卧床仍学吟。
污泥塘中婷婷立，勤奋磊落使人钦。

1992.12.24

香山红叶

既仰英名劲莫松，矢志追求必成功。
待至已酬壮志日，定欲悠游山水中。
钱塘江潮如奔马，香山枫叶似火红。
泰山极顶看日出，庐山顶上抚碧空。

君心

君心豪雄年也轻，良师益友又比邻。
刘邦洪武原黎庶，扁鹊李白不是神。
我心永记皇甫谧，君意忘朱买臣。
滚滚江河流不尽，赫赫伟业赖精神。

君有诗情

君有诗情休寂孤，文苑驰名何须愁。
政坛圣贤无六臂，术界权威岂三头。
锲之不舍镂金石，着意咀嚼啃馒头。
瓜熟蒂落成定论，欲速不达莫急骤。

1983.1.3